पेस्टिडिस पेटाइटिस रुमिनेन्टस (पी.पी.आर.)

भेड़ एवं बकरी का घातक विषाणुजनित रोग

विशाल चन्द्र, एस. नन्दी, अभिषेक
विक्रमादित्य उपमन्यू, चन्दन प्रकाश,
पवन कुमार एवं ऋषेन्द्र वर्मा

संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान
इज्जतनगर – 243 122, उ.प्र.

Scanned with OKEN Scanner

पेस्टिडिस पेटाइटिस रूमिनेन्टस (पी.पी.आर.) भेड़ एवं बकरी का घातक विषाणुजनित रोग

भूमिका:

पेस्टि डिस पेटाइटिस रूमिनेन्टस (पी.पी.आर.) जिसे 'बकरी महामारी' के नाम से भी जाना जाता है विशेषतः बकरी और भेड़ों का विषाणु जनित रोग है जिसमें मुख्यता बुखार, दस्त, निमोनिया और कई बार पशुओं की मृत्यु भी हो जाती है। यह रोग पेटामिक्सोवाइरीडी फैमिली में मोरबिलीवाइरस जीनस के कारण होता है। भेड़ और बकरियों की पशु प्रजाति इस बीमारी से सबसे अधिक प्रभावित होने वाले पशु हैं। हालांकि यह बीमारी मवेशी और कई जंगली पशुओं को भी प्रभावित करती है।

रोगजनन

पी.पी.आर. का विषाणु आंसू, नाक, खांसी के स्राव में और संक्रमित जानवरों के मल में आता है, इसलिए विशेष रूप से प्रभावित पशुओं में खांसी, छींक और उनके सम्पर्क में आने से और जल, चारा और पशुओं के बैठने का बिछावन विषाणु के स्रोत हैं। पशुओं में बीमारी के लक्षण आने से पहले विषाणु पशु के स्राव में आ जाता है और संक्रमित पशुओं की आवाजाही से तीव्रता से फैलता है।

रोगविषयक लक्षण :

यह रोग 3-6 दिनों में उत्पन्न होता है। तीव्र बुखार का अचानक शुरू होना, गंभीर

Scanned with OKEN Scanner

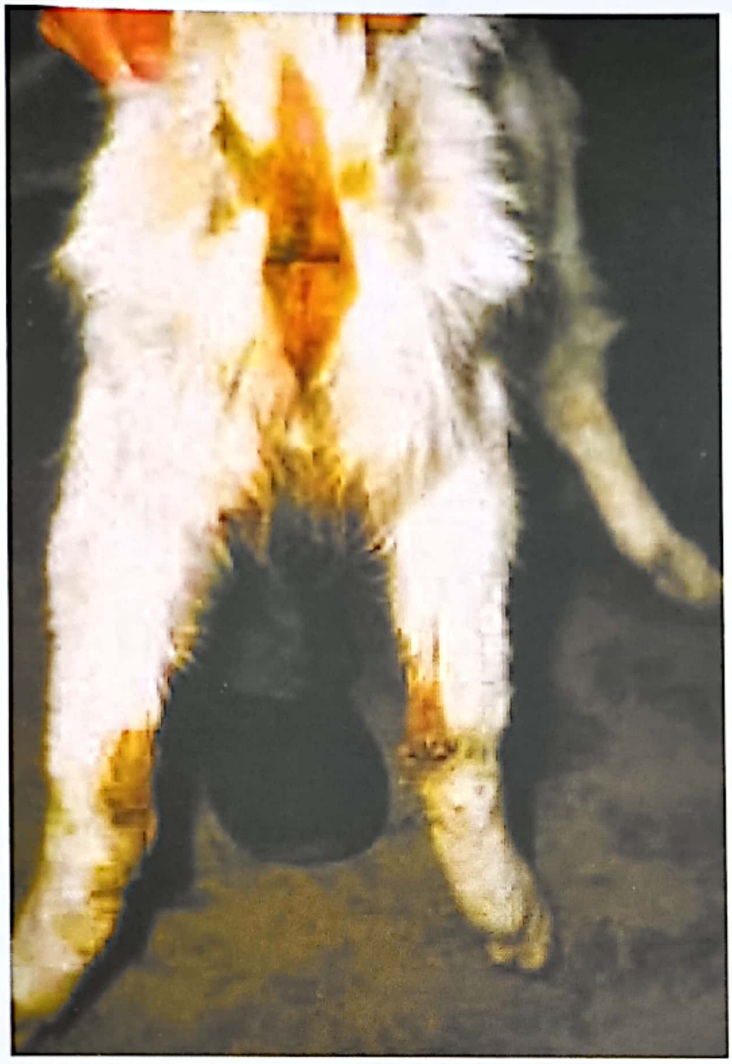

अवसाद, भूख न लगना तथा नाक से स्राव आना, स्राव कई बार गाढ़ा और पीले रंग का हो जाता है जो कई बार नासिका के ऊपर परत चढ़ाकर नासिका द्वार को बंद कर देता है।

आखों से भी निरंतर स्राव बहता रहता है। मंसूड़े, गला और गाल इस बीमारी के कारण सूज जाते हैं। गंभीर दस्त के परिणाम स्वरूप निर्जलीकरण के कारण पशु का वजन घट जाता है।

रोग के बाद जानवरों में निमोनिया हो जाता है। गर्भवती पशुओं का गर्भपात भी हो सकता है। प्रभावित पशु की पांच से दस दिन के भीतर मृत्यु हो जाती है। यह बीमारी युवा पशुओं में ज्यादा गंभीर है और भेड़ के मुकाबले बकरी प्रजाति को अधिक प्रभावित करती है। बीमारी के गंभीर होने पर पशुओं की अधिकॉशतः मृत्यु हो जाती है ।

रोग निदान एवं उपचार :

भेड़ या बकरी में उल्टी, गंभीर दस्त के साथ-साथ तीव्र ज्वर पी.पी.आर. के लक्षण हो सकते है। पीपीआर के लिए कोई विशेष उपचार नहीं है हालांकि जीवाणु और परजीवी जटिलताओं को नियंत्रित करने वाली दवाईयों का उपयोग कर पशुओं की मृत्युदर को कम किया जा सकता है।

Scanned with OKEN Scanner

टीकाकरण एवं रोकथाम

पीपीआर का जीवित तनु टीका बीमारी के लिए सफलतापूर्वक उपयोग में लाया जा सकता है। यह 1 एमएल मात्रा में सब कट मार्ग द्वारा इस्तेमाल किया जाता है और 1-3 वर्ष के लिए पशुओं में प्रतिरक्षा प्रदान करता है।

पी.पी.आर. विषाणु कीटाणुरोधन के इस्तेमाल से निष्क्रिय हो पाता है। विभिन्न कीटाणुशोधक पदार्थ जैसे सोडियम कार्बोनेट, सोडियम हाइड्रोक्साईड, सोडियम हाइपोक्लोराइट, फिनौलिक यौगिकों एवं साइट्रिक अम्ल के प्रयोग से विषाणु निष्क्रिय किया जा सकता है। सख्त संगरोध और पशु संचालन नियंत्रण से बीमारी को फैलने से रोका जा सकता है।

लेखक :

डा. विशाल चन्द्र, वैज्ञानिक, कैडरेड
डा. एस. नन्दी, प्रधान वैज्ञानिक, कैडरेड
डा. अभिषेक, वैज्ञानिक, जीवाणु एवं कवक विज्ञान
डा. विक्रमादित्य उपमन्यू, वैज्ञानिक, मानकीकरण विभाग
डा. चन्दन प्रकाश, वैज्ञानिक, कैडरेड
डा. पवन, वैज्ञानिक, विकृति विज्ञान
डा. ऋषेन्द्र वर्मा, संयुक्त निदेशक, कैडरेड

संरक्षण एवं निर्देशनः

डा. त्रिवेणी दत्त
संयुक्त निदेशक, प्रसार शिक्षा,
भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान,
इज्जतनगर - 243 122, उ.प्र.

संपादनः

डा. (श्रीमती) रूपसी तिवारी
वरिष्ठ वैज्ञानिक, संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा
डा. बी.पी. सिंह
वरिष्ठ वैज्ञानिक, संयुक्त निदेशालय, प्रसार शिक्षा

प्रकाशन :

डा. राजकुमार सिंह
निदेशक, भारतीय पशु चिकित्सा अनुसंधान संस्थान,
इज्जतनगर - 243 122, उ.प्र.

army printing press
www.armyprintingpress.com
Lucknow (0522) 6565333

Scanned with OKEN Scanner